**वर्ष : 2020-21**

**पाठ्यक्रम विवरण : (जनवरी- मई 2021)**

**पाठ्यक्रम : हिंदी (विशेष)**

**सेमेस्टर : 6**

**पेपर : हिंदी आलोचना**

**शिक्षक : डॉ. कवितेन्द्र इंदु**

**पाठ्यक्रम**

**इकाई-1:**

हिन्दी आलोचना की परम्परा का विकास भारतेन्दु युग - बालमुकुन्द गुप्त तक

**इकाई-2 :**

द्विवेदीयुगीन आलोचना के पाठों का अध्ययन : महावीर प्रसाद द्विवेदी, आचार्य रामचंद्र शुक्ल काव्य में लोकमंगल, प्रेमचंद : साहित्य का उद्देश्य

**इकाई-3 :**

छायावादयुगीन आलोचना प्रसाद : छायावाद और यथार्थवाद, हजारी प्रसाद द्विवेदी - आधुनिक साहित्य : नई मान्यताएँ, नगेन्द्र : मेरी साहित्यिक मान्यताएं

**इकाई-4 :**

रामविलास शर्मा – तुलसी साहित्य के सामन्त-विरोधी मूल्य, नामवर सिंह - कहानी : नई और पुरानी, अज्ञेय - दूसरा सप्तक की भूमिका, मुक्तिबोध- नई कविता का आत्मसंघर्ष

**पाठ्यक्रम विवरण**

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को हिंदी आलोचना के इतिहास एवं आलोचना के विभिन्न मानदंडों से परिचित कराना है। इस पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्र हिंदी आलोचना के विकास के अलावा उसमे मौजूद विभिन्न धाराओं से परिचित होंगे। हिंदी के महत्वपूर्ण आलोचनात्मक पाठों एवं आलोचकों के अध्ययन के जरिये वे हिंदी आलोचना की महत्वपूर्ण बहसों एवं विभिन्न आलोचनात्मक प्रतिमानों की जानकारी प्राप्त करेंगे। इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के बाद छात्र रचनात्मक साहित्य की समीक्षा करने में स्वयं सक्षम होंगे।

**शिक्षण समय : 16 सप्ताह (लगभग )**

**कक्षाएं : 5 लेक्चर**

कक्षाएं पेपर के पाठ्यक्रम की रूपरेखा अनुसार सप्ताह के 5 दिन प्रस्तुत समय सारणी द्वारा आयोजित की जाएंगी । प्रतिदिन कक्षा व्याख्यान के आलावा ट्युटोरियल कक्षाओं में विद्यार्थियों के प्रश्नों, शंकाओं का समाधान और निर्धारित विषयों पर विचार विमर्श किया जाएगा। असाइनमेंट, टेस्ट और प्रस्तुतीकरण के आधार पर आंतरिक मूल्यांकन होगा।

**इकाई अनुसार पाठ्यक्रम विवरण :**

|  |  |
| --- | --- |
| **सप्ताह** | **विषय** |
| सप्ताह 1 | आलोचना की अवधारणा एवं स्वरूप |
| सप्ताह 2 | आलोचना की भूमिका |
| सप्ताह 3 | **इकाई-1: हिन्दी आलोचना की परम्परा का विकास भारतेन्दु युग - बालमुकुन्द गुप्त तक** |
| सप्ताह 4 | हिन्दी आलोचना की परम्परा का विकास भारतेन्दु युग - बालमुकुन्द गुप्त तक |
| सप्ताह 5 | **इकाई-2 : द्विवेदीयुगीन आलोचना के पाठों का अध्ययन :** महावीरप्रसाद द्विवेदी - कविता का भविष्य |
| सप्ताह 6 | आचार्य रामचंद्र शुक्ल - काव्य में लोकमंगल की साधनावस्था |
| सप्ताह 7 | प्रेमचंद : साहित्य का उद्देश्य  (प्रथम असाइनमेंट) |
| सप्ताह 8 | **इकाई-3 : छायावादयुगीन आलोचना**  जयशंकर प्रसाद : छायावाद और यथार्थवाद |
| सप्ताह 9 | हजारी प्रसाद द्विवेदी - आधुनिक साहित्य : नई मान्यताएँ |
| सप्ताह 10 | नगेन्द्र : मेरी साहित्यिक मान्यताएं  ( द्वितीय असाइनमेंट) |
| सप्ताह 11 | **इकाई-4 :**  रामविलास शर्मा – तुलसी साहित्य के सामन्त-विरोधी मूल्य |
| सप्ताह 12 | नामवर सिंह - कहानी : नई और पुरानी |
| सप्ताह 13 | अज्ञेय - दूसरा सप्तक की भूमिका |
| सप्ताह 14 | मुक्तिबोध- नई कविता का आत्मसंघर्ष  (क्लास टेस्ट) |
| सप्ताह 15 | क्लास टेस्ट, पुनरावृत्ति एवं समूह चर्चा |
| सप्ताह 16 | पुनरावृत्ति एवं समूह चर्चा |

सम्बंधित पुस्तकें :

* चिन्तामणि - आचार्य रामचंद्र शुक्ल
* आस्था के चरण - नगेंद्र
* कविता के नये प्रतिमान - नामवर सिंह
* पाश्चात्य साहित्य-चिंतन - निर्मला जैन
* हिंदी आलोचना के बीज शब्द - बच्चन सिंह
* एक साहित्यिक की डायरी - मुक्तिबोध
* आलोचना से आगे - सुधीश पचौरी
* हिंदी गद्य, विन्यास और विकास - रामस्वरूप चतुर्वेदी
* दूसरी परंपरा की खोज - नामवर सिंह
* हिंदी आलोचना - विश्वनाथ त्रिपाठी
* आलोचना का नया पाठ - गोपेश्वर सिंह
* संकलित निबंध - नलिन विलोचन शर्मा
* हिंदी आलोचना का विकास - नंदकिशोर नवल
* आस्था और सौन्दर्य - रामविलास शर्मा